

---

Shri Sarveshvara Pranati Padyavali

श्रीसर्वेश्वरप्रणतिपद्यावली

Document Information

---

Text title : Shri Sarveshvara Pranati Padyavali

File name : sarveshvarapraNatipadyAvalI.itx

Category : vishhnu, nimbArkAchArya, krishna

Location : doc\_vishhnu

Author : shrIji

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 7, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 7, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीसर्वेश्वरप्रणतिपद्यावली



श्रीमच्छालं पीतफालं सुमालं तेजोजालं दीप्तभालं सतालम् ।  
गोत्रापालं कंसकालं सुचालं गोपीलालं नन्दबालं नमामि ॥ १ ॥

सुखसागरनागरनन्दसुतं सुरयोगिमनोऽम्बुजमध्यगतम् ।  
श्रुतिसङ्घदुरूहगुणौघयुतं प्रणमामि यशोमतिसङ्गतम् ॥ २ ॥

गणनाथमुखैरविगण्यगुणं गुणकल्पितमात्रवपुर्ग्रहणम् ।  
हृतसेवकसञ्चितपापगणं प्रणमामि पवित्रगुणश्रवणम् ॥ ३ ॥

ज्वरिताघृणदारुणचित्तजनुर्ब्रजगोपवधूजनवेद्यतनुं  
तनुनिर्जितकोटिविहीनतनुं ननु नौमि मुदाजलदाभतनुम् ॥ ४ ॥

मणिनूपुरशोभितपादयुगं वलयाङ्कितसुन्दरपाणियुगम् ।  
मणिराजिविराजितबाहुयुगं प्रणमामि नटाकृतिनेत्रयुगम् ॥ ५ ॥

ब्रजयोषिदनङ्गसुखाब्धिविधुं विधुकोटिसमप्रभवक्त्रविधुम् ।  
विधुशेखरहत्कुमुदस्य विधुं प्रणमामि किशोरविमुग्धविधुम् ॥ ६ ॥

श्रितगोपकदम्बकदम्बतलं ललितामलकाननपुष्पगलम् ।  
चलकुण्डलरञ्जितकर्णतलं किल नौमि विहारकलाकुशलम् ॥ ७ ॥

शिखिपिच्छसुरञ्जितसन्मुकुटं कटिसंवृतसुन्दरपीतपटम् ।  
स्फुटकान्तिघटं प्रणमामि नटं यमुनातटकुञ्जविहारविटम् ॥ ८ ॥

ब्रजगोपवधूपरिधेयहरं यमुनाजलकेलिकलाचतुरं  
जनमोहनसुस्वरवेणुधरं प्रणमामि चिरं नवनीतहरम् ॥ ९ ॥

वृषभानुसुताऽन्वितवामतनुं तनुनिर्जितनूतननीरधरं  
परमोत्कटपापविनाशकरं प्रणमामि मनोहरवेषधरम् ॥ १० ॥

फणिराजफणोपरिनृत्यकरं गरलोदमहानलतापहरम् ।  
शकटादिनिशाचरनाशकरं प्रणमामि कराग्रगिरीन्द्रधरम् ॥ ११ ॥

वनिताननचुम्बनदानमनः स्मितशंसितगोपवधूवदनः ।  
चलचैलतडिद्युतिनीलघनः हृदि मे बसतान्मुरलीवदनः ॥ १२ ॥  
जगद्ब्रह्मवपालननाशकरं करुणाब्धिगुणत्रयरूपधरम् ।  
भजनप्रियसाधुजनैकगतिं प्ररणमामि मदीयमनोवसतिम् ॥ १३ ॥  
धृतवंशिनुता वनमालिसता ब्रजराज सराधहरि भजता ।  
नतिपद्यसुमौक्तिकपङ्क्तिरियं रचिताब्रजराजमुदेभवतात् ॥ १४ ॥  
(अनन्त श्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर  
श्री “श्रीजी” श्रीब्रजराजशरणदेवाचार्यजी महाराज कृता)  
इति श्रीमन्निम्बार्कपीठाधिरूढ श्री “श्रीजी”  
श्रीब्रजराजशरणदेवाचार्यविरचिता श्रीसर्वेश्वरप्रणतिपद्यावली समाप्ता ।

Proofread by Mohan Chettoor

---

—  
*Shri Sarveshvara Pranati Padyavali*  
pdf was typeset on January 7, 2023  
—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

